Vol 6 Issue 4 Oct 2016

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 Impact Factor :4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 4 | October - 2016

GRT Golden Research Thoughts

‘टोपी शुकला’ उपन्यास मेंवर्णित साम्प्रदायिक विष

डॉ. ओघड लखमनभाई झाला
एम.ए., एम.फिल.,पीएच.डी.

प्रस्तावना :
मनुष्य के मुख्य शत्रुओ में साम्राज्यवाद और साम्प्रदायिकता दो है । आज पुरे विश्व के सामने साम्प्रदायिकता का प्रश्न सबसे बडा संकट बन गया है । आज देश के सामने कई समस्याएँ खडी हुई है जिसमें गरीबी, बेरोजगारी, महँगाई, अपहरण, आतंक आदि मुख्य है । कई साहित्यकारों ने अपने साहित्य का विषय बनाकर साहित्यिक रचना की है । और इनमें से एक है राही मासूम रज़ा ।
राही मासूम रज़ाने विभाजन के बाद की साम्प्रदायिकता के चपटे में आये हिन्दु –मुस्लिमों की मानसिकता का वर्णन अपने इस उपन्यास में किया है । विभाजन ने केवल देश का ही बटवारा नहीं किया, उसने हज़ारो लाखों हिन्दु–मुस्लीम परिवारों को ध्वस्त किया । हजारों स्त्रीयॉ विधवा बनी, बच्चे अपने माता–पिताओं से अलग हुए । अनेक बहके हुए युवक अपने परिवारजनों को सदा–सदा के लिए यहीं छोडकर पाकिस्तान चले गए । विभाजन ने सदियों से एक साथ रहते हुए हिन्दू–मु सलमानों में कायम दरार पैदा की । हिन्दू–मुस्लिम के बिच निर्मित शक और नफ़रत की भावना को हम आज भी पूरी तरह से समाप्त नहीं कर सके है ।

लेखकने स्वातंत्रोत्तर भारत में फैलनेवाले इस साम्प्रदायिक विष से प्रभावित आम भारतीय जनता की मनःस्थिति का प्रभावपूर्ण चित्रण प्रस्तु त किया है । लेखकने पारिवारिक परिवेश से लेकर शिक्षणजगत में व्याप्त साम्प्रदायिकता के स्वरूप को प्रकट किया है । ‘टोपी शुक्ला’ उपन्यास का मुख्य पात्र टोपी हिन्दु होने के नाते उसे कहीं नौकरी न मिलि, नहीं उसे कोई प्यार कर सका। वह बचपन से घर से भी उपे क्षित रहता है । जिसके कारण उसका दिमाग विद्रोही स्वरूप धारण कर लेता है। जो चाही वह चीज़ प्राप्त न कर सका । अपनी इच्छा की तृप्ति नहीं होती आखिर वह इन सबसे उबकर वह आत्महत्या कर लेता है । वह आम समाज में कम्प्रोमाइस नहीं कर सकता । लेखकने इस जिवनपरक उपन्यास का प्रारंभ अलीगढ़ युनिवर्सिटी से किया है । वहीं जो मुस्लीम लिंग के अध्यापक है उसके नाम तथा हिन्दु अध्यापक के नाम में कैसा भेद है वह दर्शाया है । वैसे भी अलिगढ़ युनिवर्सि टी मक्खी, महरी, मॉस और मौलवी के लिए प्रसिध्ध है । टोपी के जन्म से लेकर वह जब अलिगढ़ पढने के लिए जाता है और अपने पुराने साथी के साथ रहता है जिसके कारण वह अपने समाज में उपेक्षित होता है । और वह अपनी आम जिंदगी से उबकर आत्महत्या कर लेता है ।
लेखकने बताया है कि आम लोगों की तरह टोपी भी बेनाम ही पैदा हु आ था । जन्म बच्चे लेते है वह मरते–मरते हिन्दू, मुसलमान, ईसाई हिन्दूस्तानी, पाकिस्तानी गौरे, काले न जाने क्या क्या बन जाते है । बच्चे को बचपन से ही धर्म और संप्रदाय की ज्वाला में धकेल दिये जाते है । टोपी जब छोटा था तब से उसे जो पारिवारिक प्रेम मिलना चाहिए वह न मिला । व्यक्ति के व्यकितत्व का निर्माण समाज करता है, और समाज में परिवार जो बच्चे की प्र थम पाठशाला है। जहॉं से वह संस्कार प्राप्त करता है । टोपी का बड़ा भाई मुन्नी बाबू जो हर वक्त अपने दादी के पास ही रहता है । दादी उसे रामायण, महाभारत, गुलिस्तॉं, आदि की कहानी सुनाती है । टोपी इन सब से वंचित रह जाता है । वह घर छोड़कर भाग जाता है । और एक मुस्लीम बच्चे से अपनी दोस्ती कर लेता है । वह उसके घर जाता है । इक्कन की दादी जब इक्कन से कहती है कि इक्कन मियॉं इसे कु छ खिलाइए तब टोपी चौंक जाता है । और वह इक्कन से पूछता है

“तु मुसलमान है ?
“हा”
“और ई लोग ?”
ये मेरे अब्बु है । ये मेरी अम्मा है और ये दहा ।”
हम ई ना पूछ रहे । “टोपी ने कहा इहॉं लोग मियॉं है ।
‘हॉं’
इक्कन के पिता मुस्कुराएँ ।
हम लोग मियॉं है
तब हम हिआ कुछ खो ओ ना सकते ।
क्यों सवाल इक्कनने किया ।
हम लोग मियॉं लोग का छुआ ना खाते ।
मगर क्यों नहीं खाते ?
मियॉं, लोग बहुत बूरे होंयें ।[1]

लेखकने दोनों बच्चों के संवाद के द्वारा बताया है कि साम्प्रदायिकता की असर बालमानस के दिमाग में क्या असर

करती है । जो बच्चा पुरी समज प्राप्त नहीं कर पाया है वही बच्चो को परिवार से यह सब सिखाया जाता है । बालमानस का यह साम्प्रदायिकता का ज्वार वह जैसे बड़ा होता है उसके साथ बढ़ता जाता है । बचपन में बच्चों को जो संस्कार दिये जाते है उसी के आधार पर वह अपना बर्ताव करते है । इक्कन एक किताब पढ़ते वक्त वह अपने पिता से पूछ बैठता है कि, "अब्बू क्या यह हिन्दू बहुत खराब होते है ।" और यह सिख तो बहुत ही जलील मालूम होते है ।"[2]

जो बच्चे को पता नहीं है कि हिन्दू क्या होते है और मुसलमान सिक्ख आदि हम ही सिखाते है । कौन खराब क्या खराब यही सब परिवार के द्वारा ही बच्चा सिखता है । हम उसे सत्यता न बताते हुए परंपरा में धकेल देते है । इक्कन की अम्मॉ बता देती है ।

"हॉं बेटा, यह हिन्दू और सिक्ख बड़े कमीने होते है ।"[3]

इक्कन के दिमाग में तब से इन दोनों को लेकर नफरत फैलने लगी । उसे कई तरह के ख्वाब आने लगे । उसकी असर वह अपनी स्कूल में भी देखने लगा । वह सब हिन्दू दोस्तों से दूर हटता गया तथा उसका हिन्दू मास्टर भी उसे ज्यादा जोर से मारते है । वह अपने पिता से शिकायत करता है कि, "हिन्दू मास्टर हमें जी लगाकर नहीं पढ़ाते । हिन्दू लड़के हमें परेशान करते है । परसों भवानी की मिठाई में मेरा हाथ लग गया तो उसने मिठाई फेंक दी और बोला ए मियॉं इ पाकिस्तान ना है ।"[4]

राही ने बताया है कि इन साम्प्रदायिकता का ज्वार केवल अनपढ गवॉर और देहाती लोगों को ही नहीं है । लेकिन जो लोग इस देश के भविष्य का निर्माण करते है, मास्टरजी भी उसमें से बाहर नहीं है । वहीं लोग इसमें जु डे हुए है तो वह वास्तविकता दिखाकर बच्चों को उसमें से बाहर नहीं निकाल सकते । इनके कारण कॉलेज में उर्दू पढनेवाले हिन्दू लडके कम हो गये है । इक्कन जब कॉलेज का लेक्चरर बना तब इतिहास पढाते वक्त उसके सामने कई प्रकार के प्रश्न खडे होते है ।

युनिवर्सिटी का पूरा वातावरण साम्प्रदायिकता से भरा हुआ रहता है, अलिगढ युनिवर्सिटी मुल्सिम युनिवर्सिटी मानी जाती है । वहॉं के विद्यार्थीओ के बीच भी हर वक्त इन बातों को लेकर ही वाद–विवाद होते रहते है । राहीने युनिवर्सिटी के परिवेश को बताकर वहॉं चल रहे भाषावाद को प्रस्तुत किया है । हिन्दू बच्चों को केवल मुसलमान से ही नफरत नहीं है लेकिन उसे उर्दू भाषा से भी नफरत हो जाती है । इस बात को लेकर युनिवर्सिटी के उर्दू भाषा के अध्यापक पंडितजी चिंतित रहे है । पहले जो वर्ग हिन्दू लडको से भरा रहता था वह वर्ग आज बिलकु ल खाली हो जा रहा है । इस उपन्यास में सकीना और टोपी दोनों ऐसे पात्र है जो हिन्दू–मुस्लिम साम्प्रदायिकता को प्रस्तुत करते है । सकीना मुस्लिम का नेतृत्व करती है । तो टोपी जो है वह हिन्दू का प्रतिनिधित्व करता है । दोनों अच्छे दोस्त हु ए भी नफरत, शक, डर खा रहे है ।

"मैं हर हिन्दू से नफरत करती हूँ ।
सकीना ने कहाँ । बहुत अच्छा करती है । टोपीने कहा ।
भाई मुझ पर और तुम पर अब शक नहीं कर सकते । वैसे भी मैं भी मुसलमानों से कोई खास प्यार नहीं करता ।
तो यहाँ क्यों आते हो ?
यह तो मेरे दोस्त का घर है ।
दोस्त
तो वह शब्द अभी तक जी रहा है ।"[5]

सकीना और टोपी के बीच के संवाद के द्वारा टोपी प्राचीन सांस्कृ तिक विचारसरणी को कैसे प्रस्तुत करता है यह बताया गया है ।

राहीने राजनीति के क्षेत्र में साम्प्रदायिकता का निरूपण करते हुए मुन्नी बाबू और भैरव के बीच हो रहे चुनाव का प्रसंग वर्णन किया है । मुन्नी बाबू को हिन्दू संस्कृ ति और सभ्यता का नारा अच्छा लगा । आखिर यह मुसलमान जो गौहत्या करते है और जो एक विदेशी भगवान की पूजा करते है अगर ये मुसलमान को पाकिस्तान भेज दिये जाये तो जो नौकरियॉं इन्हें मिलती है यह भी हिन्दूओं को ही मिल जायेंगी । शक और डर का परिवेश व्यक्ति की व्यक्तिमता को खो देता है । अगर ऐसा किया जाये कि युध्ध हो रहा है और मुसलमानों कि वफादारी देखने के खातिर उसे फौज़ में भर्ती भी करले तो एक शक बना रहता है । कि वह कहीं पाकिस्तान से न मिल जाय । देशविभाजन के बाद देश में रहे बाकी सब मुसलमान को यहीं शक, नफरत और डर का शिकार बनना पडा । जिसके कारण वातावरण तंगदिलीयुक्त रहता है । और कभी कभी बलवे का रूप भी धारण कर लेता है । टोपी एक तो हिन्दू और फिर मु सलमान औरत से फसॉ है यह अफवा छोटी सी युनिवर्सिटी के कैम्पस में वायु की तरह फैल जाती है । ज्यादातर लोगों को ऐसी बातों में ही रस होता है । जिसके कारण टोपी को न अच्छी नौकरी मिल सकती है और उसकी स्कोलरशीप भी बंध कर दी जाती है ।

लेखक धर्म के आधार पर फैली हुई छूआछूत की भावना पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करते है । तथा समाज में साम्प्रदायिकता का प्र सार किस प्र कार अपने आप में किया जाता है वह बयॉन इस उपन्यास में किया है । आमलोग मुसाफरी में भी किस तरह से हिन्दू–मुस्लिम का भेद बताते है यह दर्शाया गया है, एक ट्रेन के डिब्बे का वर्णन करते हुए बताते है हिन्दू–मुसलमान किस तरह से एक–दूसरें पर धीन जाते है । मुसाफरी के दरम्यान हिन्दू लोग मुस्लिम को जगह नहीं देते और मुस्लिम लोग हिन्दू के पास बैठना नहीं चाहते । टोपी जब ट्रेन में बैठकर घर जाता है तो एक पंडितजीने शेरवानी पहने टोपी को अपने पास नहीं बैठने दिया क्योंकि वह खाना खा रहे थे, शायद वह उसके खाने को छू गया तो ।

लेखकने शिक्षा जगत में साम्प्रदायिकता का ज़्वार कैसा बढा हुआ है वह टोपी के एक कॉलेज के इन्टरव्यु के द्वारा बताया है । टोपी को इन्टरव्यु में पूछा गया ।

"यह आपकी युनिवर्सिटी में आये दिन दंगे क्यों होते रहते है ?"
पहला सवाल हुआ ।
साहित्य ।
साहित्य का इतिहास ।
साहित्य की समस्या ।
इस युनिवर्सिटी को बन्द कर देना चाहिए ?

"आप रसखान को हिन्दू मानते है या मुसलमान ? मैं तो जायसी को भी हिन्दू मानता हूँ । टोपीने कहा और गालिब और मीर को भी"[6]

जिस युनिवर्यिटी में ये सवाल किये जाते है कि आप रसखान को हिन्दू या मुसलमान मानते है । इस युनिवर्सिटी के अध्यापक विद्यार्थी को सभ्यता का पाठ क्या सिखायेंगे । साम्प्रदायिकता केवल मजहब के कारण ही नहीं है । लेकिन जो साहित्य के विद्वान कहलाते है ये लोग भी साम्प्रदायिकता

की आग के शोले बन गये है । ये लोग भी कवियों और लेखको के संप्रदाय के आधार पर पसंद नापसंद करते है । लेखकने टोपी को बचपन से ही अपमानित, उपेक्षित, बताया है । जो जिन्दगीभर संघर्ष करते रहने पर भी उसे किसी का प्रेम, नौकरी और ना ही एक अच्छी बीवी मिल सकी । आखिर वह इन परिस्थितियों से तंग आकर आत्महत्या कर लेता है । इसकी हत्या का कारण केवल साम्प्रदायिकता है।

लेखकने वास्तविकता के साथ समाज में साम्प्रदायिकता का स्थान कहा है यह बतलाया है । यह नफरत, शक, डर देश के बॅंटवारे की औलादे है और यह यह जवान हो गई है । हम आज भी वही मानसिकता के लिए जिते है जो सन् 1947 में थी । इस साम्प्रदायिकता के विचारों को बढावा देने का कार्य हमारे विश्वविद्यालय, हमारी पाठ् यपु स्तके, हमारे स्कूल में लगातार पढाया जा रहा है कि हिन्दू विजेता थे और मुसलमानों के पुरखों में हिन्दु स्तान पर हुकु मत की है । यह साम्प्रदायिक सोच भारत के सांस्कृतिक जीवन में किस प्रकार गहराई में जाकर बैठी है । और आज का सामान्य सांस्कृतिक प्रचार भी यह है कि मुसलमान लोग बूरे होते है । हिन्दू साम्प्रदायिकता यहीं से अपनी बात प्रारंभ करती है क्योंकि यह बात घुटी के साथ पिलाई जाती है । विडम्बना यह है कि एसा कहनेवाले लोग यह जोडना नहीं भुलते कि उनके बहुत से दोस्त मुसलमान हें और उनके स्नेह सम्बन्ध पारिवारिक रूप से जुडे है ।

उन्हें पूछा जाये कि मुस्लिम मित्रों में कोई बूरा है ? उतर नहीं देते लेकिन बताते है कि सामान्यतः मुस्लिम बूरे और साम्प्रदायिक होते है ।

यथार्थ रूप में टोपी शुक्ला उपन्यास मानवीय सम्बन्धों और साम्प्रदायिकता की खींचतान की कहानी बन जाती है । साम्प्रदायिकता की इस खींचतान में सभी किसी न किसी तरह समजौता कर लेते है । टोपी का सहज विद्र ोह उस समजौता नहीं करने देता और विपरीत परिस्थितियों में आत्महत्या कर लेता है । अपने शहरी व्यक्तित्व को तलाश ने और स्थापित करने के प्रयास में जुझनेवाले व्यक्ति की मार्मि क कहानी है टोपी शुक्ला । साम्प्रदायिकता की सनक से मनुष्यता या आदमियत को भूला दिया है । जिसे रजाने टोपी शुक्ला उपन्यास में महेश और सैय्यद आषिद रज़ाके माध्यम से व्यक्त किया है । टोपी शुक्ला समाज की संकीर्णताओं से लडनेवाले व्यक्ति समाज में मिसफिट होने की ट्रेजेडी को व्यक्त करती है । यह हम सब की कहानी है । राही बताते है कि साम्प्रदायिकता के प्रेत हमारे अन्दर दिलों के किसी अंधेरी गली में छिपा बैठा है और जब किसी ओर से रोशनी आती है तो वह प्रेत उठकर दिल के दरवाज़े खिड़कियॉ बन्द कर लेता है ।

:: सन्दर्भ सूचि ::

1. टोपी शुक्ला – राही मासुम रज़ा, राजकमल प्र काशन, दिल्ली संस्कतण–1968
पृष्ठ.30.31.
2. वही पृष्ठ.52.53.
3. वही पृष्ठ.53.
4. वही पृष्ठ.56.
5. वही पृष्ठ.82.
6. वही पृष्ठ.141.

डॉ. ओघड लखमनभाई झाला
एम.ए., एम.फिल.,पीएच.डी.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org